



## द लैंग्वेज फ्रेंडशपि ब्रजि: ICCR

### प्रलिमिंस के लयि:

लैंग्वेज फ्रेंडशपि ब्रजि, ICCR, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, साझा सांस्कृतिक वरिसत ।

### मेन्स के लयि:

द लैंग्वेज फ्रेंडशपि ब्रजि प्रोजेक्ट को लागू करने में चुनौतियां और अवसर ।

## चर्चा में क्यों?

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) ने 'द लैंग्वेज फ्रेंडशपि ब्रजि' नामक एक परियोजना की परिकल्पना की है, जिसका उद्देश्य उन पड़ोस में सांस्कृतिक पदचिह्न का विसतार करना है जिनके साथ भारत के ऐतिहासिक संबंध हैं ।

- इस परियोजना का उद्देश्य भारत को अपने महाकाव्यों और शास्त्रीय के साथ-साथ समकालीन साहित्य का इन भाषाओं में अनुवाद करने में सक्षम बनाना है ताकि दोनों देशों के लोग उन्हें पढ़ सकें ।

## प्रोजेक्ट के बारे में:

### परचिय:

- यह परियोजना म्यांमार, श्रीलंका, उज़्बेकस्तान और इंडोनेशिया जैसे देशों में बोली जाने वाली भाषाओं में विशेषज्ञों का एक पूल तैयार करेगी ताकि बेहतर लोगों से लोगों के आदान-प्रदान की सुविधा मिल सके ।
- यह इनमें से प्रत्येक देश की आधिकारिक भाषाओं में पाँच से 10 लोगों को प्रशिक्षित करेगा ।
  - अब तक, ICCR ने 10 भाषाओं पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें कज़ाख, उज़्बेक, भूटानी, घोटी (तिब्बत में बोली जाने वाली), बर्मी, खमेर (कंबोडिया में बोली जाने वाली), थाई, सहिली और बहासा (इंडोनेशिया और मलेशिया दोनों में बोली जाने वाली) भाषाएँ शामिल हैं ।
- हालाँकि कई विश्वविद्यालय और संस्थान इन भाषाओं में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं । परंतु केवल कुछ विश्वविद्यालय और संस्थान ही ICCR सूची की 10 भाषाओं में से कोई भी पढ़ाते हैं ।
  - उदाहरण के लिये, सहिली भाषा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और रक्षा मंत्रालय के अधीन वदिशी भाषा स्कूल (SFL) में पढ़ाया जाता है ।

### महत्त्व:

- यह परियोजना भारत की वदिश नीति और सांस्कृतिक कूटनीति के लिये महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह इन देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों को सुदृढ़ करने में मदद करेगी ।
- इन देशों की आधिकारिक भाषाओं में भाषा विशेषज्ञों को प्रशिक्षित करने से भारत अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने एवं अपने पड़ोसियों के साथ मज़बूत सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध बनाने में सक्षम होगा ।
- यह वर्तमान भू-राजनीतिक संदर्भ में भी विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि भारत इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिये अपने पड़ोसी देशों के साथ अपने संबंधों को मज़बूत करना चाहता है ।
- सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर, भारत इन देशों के बीच मज़बूत संबंध बना सकता है, जो इस क्षेत्र में चीनी आर्थिक और रणनीतिक पहलों के नकारात्मक प्रभाव का मुकाबला करने में मदद कर सकते हैं ।

## ICCR

- ICCR वदिश मंत्रालय के तहत भारत सरकार का एक स्वायत्त संगठन है ।
- यह अन्य देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से सांस्कृतिक व्यवहार को बढ़ावा देता है ।
- इसकी स्थापना वर्ष 1950 में भारत के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने की थी ।

- ICCR को वर्ष 2015 से वदिशों में स्थिति भारतीय मशिनों/केंद्रों द्वारा [अंतर्राष्ट्रीय योग दविस](#) के उत्सव को सुवधाजनक बनाने की ज़मिमेदारी सौंपी गई है ।
- ICCR ने **प्रतषिठति भारतवदि पुरस्कार**, वशिष संस्कृत पुरस्कार, वशिषिट पूरव छात्र पुरस्कार और गसिला बॉन पुरस्कार सहति कई पुरस्कारों की स्थापना की है, जो वभिनिन कषेत्रों में उनके योगदान के लयि वदिशी नागरकिों को प्रदान कयि जाते हैं ।

## चुनौतयिाँ:

- इसकी प्रमुख चुनौतयिों में से एक **इन भाषाओं को पढ़ाने के लयि भारत में बुनयिादी ढाँचे और प्रशकिषति शकिषकों की कमी** है । इन भाषाओं को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लयि इस परयिोजना के तहत **भाषा केंद्रों की स्थापना और शकिषकों को प्रशकिषति करने के क्रम में पर्याप्त नविश** की आवश्यकता होगी ।
- इसके अतरिकित इस परयिोजना के तहत वभिनिन देशों में इन भाषाओं का अध्ययन करने वाले भारतीयछात्रों को **छात्रवृत्ति प्रदान करने के लयि पर्याप्त संसाधनों** की आवश्यकता होगी ।
- इसके अलावा इस परयिोजना के तहत अन्य भाषाओं को शामिल करने की चुनौती का भी सामना करना पड़ सकता है क्योकि ऐसे कई पड़ोसी देश हैं जनिसे भारत के महत्वपूर्ण सांस्कृतकि और आर्थकि संबंध हैं तथा उन देशों की भाषाएँ वर्तमान में इस परयिोजना में शामिल नहीं हैं ।

## आगे की राह:

- इस परयिोजना में कई चुनौतयिों होने के बावजूद इससे भारत के लयि अपने पड़ोसयिों के साथ अपने सांस्कृतकि और आर्थकि संबंधों को गहरा करने एवं इस कषेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलति करने जैसे अवसर प्राप्त होते हैं ।
- वशिषज्जों का मानना है कि ICCR की भाषाओं की सूची के वसितार कयि जाने आवश्यकता है, क्योकि भारत के अन्य पड़ोसी देशों के साथ सांस्कृतकि और आर्थकि संबंधों में भी वृद्धिदेखी जा रही है ।
- उदाहरण के लयि, चकितिसा पर्यटन के उदय के साथ, तुर्की, बांग्लादेश, अफगानसितान और मालदीव जैसे देशों से लोगों की यात्राओं को सुवधाजनक बनाने के लयि अनुवादकों तथा दुभाषयिों की आवश्यकता होती है ।
  - इस ज़रूरत को पूरा करने के लयि जवाहरलाल नेहरू वशिषवदियालय जल्द ही पश्तो में एक पाठ्यक्रम की शुरुआत करेगा ।

## स्रोत: द हद्रि

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/iccr-2>

